ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 319-325

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं में स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यायें एवं जागरूकता

1. नीलम हरदैनियाँ
2. डॉ. मुकेश चन्द

1. शोध अध्येत्री, 2. प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, बी.एस.ए. कॉलेज, मथुरा (डॉ. बी.आर. आम्बेडकर वि.वि., आगरा), मथुरा (उ0प्र0), भारत

Received-19.03.2023, Revised-26.03.2023, Accepted-30.03.2023 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः ***स्वास्थ्य से अभिप्राय स्वस्थ शरीर निरोग अवस्था, सबल, स्वस्थ मन की अवस्था से है। इस अवस्था में सुचारु कार्यकुशलता एवं सुव्यवहार की स्थिति रहती है। उत्तम स्वास्थ्य अपने आपमें एक लक्ष्य है जिसे पाने का प्रत्येक मनुष्य हरसम्भव प्रयास करता है। हमेशा स्वस्थ एवं निरोगी रहने की प्रवृत्ति ही मनुष्य को सुखी तथा अच्छा जीवन व्यतीत करने में सहायक होती है। इस प्रकार स्वास्थ्य केवल शरीर से ही नहीं, मन मस्तिष्क से भी घनिष्ठ रूप से संबंधित है। स्वस्थ समाज के लिए स्त्री पुरुष का पूर्ण स्वस्थ होना इतना ही आवश्यक है जितना कि स्वस्थ मन के लिए स्वस्थ शरीर आवश्यक है।***

कुंजीभूत शब्द– मानसिक क्षमता, शारीरिक क्षमता, संतुलित विकास, भौतिक, सामाजिक पर्यावरण, जीवनकाल, कार्यकुशलता।

भारत सरकार ने प्रथम पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत स्वास्थ्य को परिभाषित करते हुए कहा था कि, ''स्वास्थ्य उस सकारात्मक दशा का नाम है जिसमें मनुष्य की मानसिक एवं शारीरिक क्षमताओं का संतुलित विकास होता है तथा व्यक्ति संतुलित व पूर्ण जीवन व्यतीत करने योग्य बनता है। स्वास्थ्य का तात्पर्य व्यक्ति का सम्पूर्ण पर्यावरण, भौतिक एवं सामाजिक पर्यावरण के साथ अभियोजन है। अपने जीवनकाल में बालिकाएँ विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं से घिरी रहती हैं। भारत में बालिकाओं के स्वास्थ्य को बेहद हल्के स्तर पर लिया जाता है। बालिका भ्रूण हत्या, बाल विवाह, प्रथम प्रसव में शीघ्रता, बारम्बार गर्भधारण रोगों के बारे में अज्ञानता, निरक्षरता, अंधविश्वास, बालिकाओं व महिलाओं का अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत ना होना व कुपोषण के कारण ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाएँ विभिन्न स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से लगातार ग्रस्त रहती हैं। लिंग भेद जैसी समस्या के कारण बालिकाओं को संतुलित व पौष्टिक भोजन नहीं मिल पाता है जिसके कारण समुचित पोषक तत्वों के अभाव में वे कमजोर होती रहती है।[1] भारत में हर साल हजारों बालिकाएँ केवल इसलिए मौत के मुँह में समाज जाती हैं क्योंकि उनकी पहुँच मूलभूत स्वास्थ्य सुविधाओं तक नहीं हो पाती।[2]

अविकसित बालिका एक लघु माँ बन जाती है। एक लघु माँ एक लघु बच्चे को जन्म देती है और छोटे बच्चे का कम विकास होता है और यदि वह बच्ची हो तो यह चक्र निरन्तर चलता रहता है। बालकों की तुलना में बालिकाओं के उन्नत स्वास्थ्य एवं पोषण को निम्न समझा जाता है। एक रिपोर्ट के अनुसार हर तीन बालकों पर एक बालिका को स्वास्थ्य सुविधा प्रदान की जाती है जो कि बहुत ही कम है। बालकों की तुलना में बालिकाएँ अधिक बीमार पड़ती हैं और जब तक कि उनकी बीमारी बहुत अधिक गम्भीर नहीं हो जाती तब तक उन्हें चिकित्सा सेवा उपलब्ध नहीं कराई जाती।3 बालिकाओं को भी शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का उच्चतम स्तर प्राप्त करने का अधिकार है। इस अधिकार का उपयोग उनके जीवन, उनके स्वास्थ्य और सभी क्षेत्रों में उनकी समान भागीदारी के लिए महत्वपूर्ण है लेकिन महिलाओं की मौलिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच ना के बराबर है और ना ही उन्हें स्वास्थ्य रक्षा व देखभाल के समान अवसर प्राप्त होते हैं। बालिकाओं को ना तो पोषक आहार मिलता है और ना उनके स्वास्थ्य की समुचित देखभाल की जाती है। प्रस्तुत अध्ययन में बालिका स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य रक्षा के विभिन्न बिन्दुओं को निम्न प्रकार से विश्लेषित किया गया है –

बालिका स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य का अर्थ– स्वास्थ्य जीवन का अनुकूल गुण है जो हमें जीवन को पूर्णतः जीने में सहायता करता है। साथ ही मित्र व सहयोगियों के साथ सेवा करने में सहायता करता है। स्वास्थ्य एक मानसिक धारणा है जिसे साधनों के माध्यम से तथा स्वच्छता का उत्तम विधि द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। स्वास्थ्य एक ऐसा पहलू है जिसे प्रायः सभी लोग परिभाषित करने में कठिनाई अनुभव करते हैं। आमतौर पर एक साधारण व्यक्ति शरीर का निरोगी होना ही स्वास्थ्य समझता है। जबकि शरीर का निरोगी होना स्वास्थ्य का एक पहलू मात्र है जो स्वास्थ्य को परिभाषित करने हेतु व्यापकता का बोध नहीं कराता। एक मनुष्य उत्तम स्वास्थ्य को पाकर ही परिवार, समाज व राष्ट्र के कल्याण आर्थिक उन्नति एवं उत्थान में अपना नैतिक योगदान दे सकता है। मनुष्य में पूर्ण रूप से स्वस्थ रहने की लालसा होना नितान्त स्वाभाविक एवं सार्वभौमिक है।

बालिकाओं का स्वास्थ्य स्तर– बालिकाओं के स्वास्थ्य को बालकों की तुलना में काफी निम्न समझा जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में बालकों की देखरेख बालिकाओं की अपेक्षा अधिक बेहतर तरीके से की जाती है उनके खान–पान एवं रहन–सहन पर अधिक ध्यान दिया जाता है। जिसके परिणामस्वरूप प्रारम्भ से ही बालिकाओं का शारीरिक व मानसिक विकास अवरुद्ध हो जाता है और उनका स्वास्थ्य स्तर गिरता जाता है।

बालिकाओं के निम्न स्वास्थ्य स्तर होने के अनेक कारण हैं जिसमें उचित देखरेख का अभाव, पौष्टिक आहार की कमी, उचित चिकित्सा सेवाओं का अभाव प्रमुख है। उचित चिकित्सा ना मिलने के कारण कई बार वे घातक रोगों की शिकार होकर

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

अकाल मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। यही कारण है कि शिशु काल में बालकों की तुलना में बालिकाएँ अधिक काल कलवित होती हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में 51.43 प्रतिशत उत्तरदात्रियों का मानना है कि वे स्वस्थ हैं, 23.80 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने स्वीकार किया कि वे स्वस्थ महसूस नहीं करती हैं जबकि 24.77 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ की राय इस विषय में तटस्थ रही। अतः तथ्यों को स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदात्रियाँ ने अपने आपको स्वस्थ बताया है। उपर्युक्त विश्लेषण निम्नांकित सारणी द्वारा दर्शाया गया है –

सारणी संख्या 4.1

क्या आपको लगता है कि आप स्वस्थ हैं

विकल्प	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	162	51.43
नहीं	75	23.80
कुछ कह नहीं सकती	78	24.77
योग	315	100

बालिका स्वास्थ्य रक्षा हेतु किए गए प्रयास

बाल्यकाल से ही बालिकाओं का स्वास्थ्य स्तर बालकों की तुलना में कम रहा है और इसका मुख्य कारण भारतीय सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक व्यवस्था में निहित है। बालिकाओं के स्वास्थ्य पर कम ध्यान दिया जाता है जबकि बालकों पर अधिक। जन्म लेने वाले बच्चों में बालिकाओं के जीवित रहने की सम्भावना अधिक होती है किन्तु जैसे–जैसे उनकी आयु बढ़ती है। हमारे देश में उनकी मृत्यु दर बढ़ने लगती है। इसका कारण यह है कि बालिकाओं को वे तमाम मूलभूत सुविधाएँ, उचित चिकित्सा सेवा उपलब्ध नहीं कराई जाती जो उनके ठीक ढंग से बड़े होने के लिए अनिवार्य होती है। उनके स्वास्थ्य रक्षा हेतु विशेष प्रयास किए ही नहीं जाते।

स्वास्थ्य रक्षा हेतु विशेष प्रयास करने के सन्दर्भ में 39.69 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने सकारात्मक उत्तर दिया। 48.57 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने नकारात्मक उत्तर दिया जबकि 11.74 उत्तरदात्रियों ने इस विषय पर कुछ नहीं कहा।

अतः अधिकांश उत्तरदात्रियों ने माना कि वे अपने स्वास्थ्य रक्षा हेतु विशेष प्रयास करती है ताकि वे स्वस्थ रह सकें। उपयुक्त तथ्यों का प्रस्तुतिकरण निम्न तालिका द्वारा किया गया है।

सारणी संख्या 4.2

क्या आप अपने स्वास्थ्य रक्षा हेतु विशेष प्रयास करती हैं ?

विकल्प	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	125	39.69
कुछ कह नहीं सकते	37	11.74
नहीं	153	48.57
योग	315	100

बालिकाओं का स्वास्थ्य परीक्षण व देखभाल

बालिकाओं के स्वास्थ्य स्तर को प्रभावित करने का मूल कारण उनका शैक्षिक पिछड़ापन है तथापि आज के समाज में परिवर्तन हो रहे हैं किन्तु अभी भी इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि बालिकाओं की शिक्षा पर व्यय करना व्यर्थ माना जाता है। मनुष्य के जीवन और उसकी खुशी के लिए शिक्षा एवं स्वास्थ्य से ज्यादा महत्वपूर्ण किसी अन्य वस्तु की कल्पना कर पाना भी कठिन है। शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में किया गया निवेश किसी भी देश के मानव संसाधन विकास में सबसे महत्वपूर्ण होता है। मानव जीवन में शिक्षा व स्वास्थ्य के महत्व को स्वीकार करते हुए संविधान में इसे राज्य सूची में शामिल किया गया है। स्वस्थ परिवार और स्वयं अपने स्वास्थ्य के लिये यह आवश्यक है कि उन्हें शिक्षा दी जाये, क्योंकि शिक्षा के अभाव में वे अस्वास्थ्य जीवन शैली की शिकार हो जाती है। निजी अस्पतालों में दवाइयों व चिकित्सा सेवाओं के मंहगा होने के कारण भी परिवार में बालिकाओं को चिकित्सा सेवाएँ शीघ्र उपलब्ध नहीं कराई जाती।

समय–समय पर स्वास्थ्य परीक्षण कराते रहना शरीर के लिए अति आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन में यह जानने का प्रयास करने पर क्या बालिकाएँ स्वास्थ्य परीक्षण कराती हैं तब 33.97 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने नकारात्मक उत्तर दिया। 15.24 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ कभी–कभी स्वास्थ्य संबंधी परीक्षण कराती हैं। मात्र 10.48 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने सकारात्मक उत्तर दिया। जबकि सर्वाधिक 40.31 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने बीमार पड़ने पर अपना स्वास्थ्य परीक्षण कराती हैं।

तथ्यों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि बालिकाओं में स्वास्थ्य परीक्षण कराने को लेकर जागरुकता का अभाव है। उन्हें अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए तथा समय–समय पर स्वास्थ्य परीक्षण कराकर चिकित्सक से सलाह लेनी चाहिए।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

बालिकाओं के स्वास्थ्य के प्रति बरती जाने वाली लापरवाही अत्यन्त चिन्ताजनक है। उपर्युक्त तथ्यों का विश्लेषण निम्नलिखित सारणी द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

सारणी संख्या 4.3

बालिकाओं का स्वास्थ्य परीक्षण व देखभाल

विकल्प	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	33	10.48
नहीं	107	33.97
कभी–कभी	48	15.24
बीमार पड़ने पर	127	40.31
योग	315	100

बालिका अस्वस्थता एवं चिकित्सीय उपचार

ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी स्वास्थ्य के प्रति पूर्वाग्रहों तथा अंधविश्वास की भावना दिखाई पड़ती है। जो रीति रिवाज व धारणाएँ हजारों वर्ष पहले बनाई गई थीं। वे उस समय की विभिन्न परिस्थितियों एवं अवसरों के लिए गठित की गई थी, किन्तु आज जब कि समय और परिस्थितियाँ दोनों ही बदल गई हैं तब भी समाज उन रिवाजों से पूर्ण रूप से मुक्त नहीं हो पाया है। आज भी माता–पिता पुत्र को पुत्री की तुलना में अधिक महत्व देते हैं। बालिका के स्वास्थ्य के प्रति संचेतता का अभाव है। अस्वस्थ होने पर उसे आसानी से चिकित्सा सुविधा नहीं मिल पाती। स्वभाव से संकोची होने के कारण भी बालिकाएँ अपने रोगों को छुपाती हैं जिससे उनकी बीमारी गंभीर रुप धारण कर लेती हैं। परिवार के पुरुष सदस्य भी बालिकाओं को चिकित्सीय सुविधाएँ दिलाने में विलम्ब करते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में 41.58 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने स्वीकार किया कि अस्वस्थ होने पर सर्वप्रथम वे घरेलू उपाय करती हैं जबकि 43.18 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने कहा कि वे चिकित्सक से इलाज कराती हैं। 2.22 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ इलाज के लिए वैद्य के पास जाती हैं जबकि 8.26 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ अस्वस्थ होने पर वे कोई भी उपाय नहीं करती हैं। अतः तथ्यों के विश्लेषण से स्पश्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदात्रियाँ अपने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह हैं वे अपने स्वास्थ्य पर उचित ध्यान नहीं देती हैं। उपर्युक्त विश्लेषण निम्न सारणी द्वारा स्पश्ट किया जा सकता है –

सारणी संख्या 4.4

बालिका अस्वस्थता एवं चिकित्सीय उपचार

विकल्प	आवृत्ति	प्रतिशत
घरेलू उपचार करती हैं	131	41.58
डॉक्टर से इलाज कराती हैं	136	43.18
झाड़फूंक कराती हैं	07	2.22
वैद्य के पास जाती हैं	15	4.76
कुछ नहीं करतीं	26	8.26
योग	315	100

ग्रामीण परिवेश में रहने वाली बालिकाओं की मुख्य रोगों से सम्बन्धित जानकारी

स्वास्थ्य के अर्न्तगत जीवन की सम्पूर्णता का नियम समाहित होता है। मनुष्य को स्वयं को जीवित रखने की आन्तरिक रुचि केवल अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए नहीं होती वरन् उसकी रुचि उत्तम स्वास्थ्य में भी होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में बालिकाओं का स्वास्थ्य अनेक कारणों से प्रभावित होता है। कार्य की अधिकता, उचित पोषण का ना मिलना, स्वच्छता का अभाव, अत्यधिक श्रम एवं स्वास्थ्य के प्रति बरती जाने वाली लापरवाही के कारण बालिकाएँ अनेक रोगों से ग्रस्त हो जाती हैं। जो उचित चिकित्सा ना मिलने के कारण कई बार बेहद गंभीर रुप धारण कर लेते हैं। कई बार बालिकाओं को कई रोगों के विषय में उचित जानकारी नहीं होती और वे उसे बेहद हल्के तरीके से लेती हैं। यहाँ तक कि कई रोग तो ऐसे हैं जिनसे ग्रस्त होने के बाद भी वे उसके विषय में कुछ नहीं जानतीं।

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वाधिक 91.75 प्रतिशत उत्तरदात्रियों को ग्रामीण परिवेश में होने वाले कुछ रोगों के विषय में जानकारी है जबकि 5.07 प्रतिशत उत्तरदात्रियों को सभी रोगों के विषय में जानकारी है। 3.18 प्रतिशत उत्तरदात्रियों को अन्य रोगों के विषय में जानकारी है। तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदात्रियों को ग्रामीण परिवेश में होने वाले रोगों के विषय में जानकारी है। वहीं ऐसी कोई भी बालिका नहीं मिली जिसे किसी भी रोग की जानकारी ना हो। उपर्युक्त विश्लेषण को निम्न सारणी द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है –

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

सारणी संख्या 4.5

ग्रामीण परिवेष में होने वाली मुख्य रोगों से संबंधित जानकारी

विकल्प	आवृत्ति	प्रतिशत
सभी रोगों की जानकारी है	16	5.07
किसी भी रोग की जानकारी नहीं है	–	–
कुछ रोगों की जानकारी है	289	91.75
अन्य	10	3.18
योग	315	100

बालिकाओं में विभिन्न रोगों के विषय में जागरुकता

ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली बालिकाओं की स्वास्थ्य स्थिति आज भी चिन्ताजनक है। इनका जीवन स्वच्छता एवं सन्तुलित पोषण के अभाव में विभिन्न स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करने हेतु विवश है। विभिन्न रोगों जैसे रक्ताल्पता, ष्वेत प्रदर आदि के कारण उनका स्वास्थ्य लगातार गिरता चला जाता है और वे थकावट, शिथिलता की शिकार हो जाती हैं और जिसके परिणामस्वरूप उन्हें मानसिक स्तर में भी गिरावट महसूस होती रहती है और धीरे–धीरे यह उनके जीवन का हिस्सा बन जाता है जबकि जरा सी जानकारी और शुरुआत में ही उपचार लेकर वे इससे बच सकती थीं। अधिकांश बालिकाओं को हॉरमोन से होने वाले परिवर्तनों और शरीर में हो रहे बदलावों का ज्ञान नहीं होता जिससे वे विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं से ग्रस्त हो जाती हैं। यदि वे षुरु से ही अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देंगी और उपचार कराएंगी तो उनकी कार्यक्षमता भी बढ़ेगी और वे मानसिक व शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगी। प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण बालिकाओं में होने वाले विभिन्न रोगों के सन्दर्भ में जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करने पर 13.65 प्रतिषत उत्तरदात्रियों को अस्थमा के, 12.39 प्रतिशत उत्तरदात्रियों को रक्ताल्पता (Anemia) के, 38.09 प्रतिशत उत्तरदात्रियों को सिर दर्द/पेट दर्द के, 3.17 प्रतिष्शत उत्तरदात्रियों को श्वेतप्रदर (Leuckoria) के, 25.72 प्रतिशत उत्तरदात्रियों को त्वचा संबंधी, जबकि 6.98 प्रतिषत उत्तरदात्रियों को अन्य रोगों के विषय में जानकारी है। अतः तथ्यों के विश्लेषण से यह पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाली उत्तरदात्रियों को वहाँ पर होने वाले रोगों के विषय में जानकारी है।

सारणी संख्या 4.6

बालिकाओं की विभिन्न रोगों के विषय में जागरुकता

विकल्प	आवृत्ति	प्रतिशत
अस्थमा	43	13.65
रक्ताल्पता (Anemia)	39	12.39
सिर दर्द / पेट दर्द 1	20	38.09
श्वेत प्रदर (Leuckoria)	10	3.17
त्वचा संबंधी	81	25.72
अन्य	22	6.98
योग	315	100

रोगों की उत्पत्ति के लिए उत्तरदायी कारण

ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी स्वास्थ्य पर उचित ध्यान नहीं दिया जाता है। अस्वच्छता, उचित खान पान का अभाव, अशिक्षा, स्वास्थ्य के महत्व को ना समझना, निर्धनता, कुपोषण आदि अनेक ऐसी समस्याएँ हैं जो आज भी विद्यमान हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ आज भी यह मानती हैं कि पति से पहले भोजन नहीं करना चाहिए क्योंकि यह धर्म के विरुद्ध है। इस कारण उचित भोजन ना मिल पाने के कारण वे कुपोषण का षिकार हो जाती हैं और रक्ताल्पता जैसे गम्भीर रोगों से ग्रस्त हो जाती हैं। प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण क्षेत्रों में रोगों की उत्पत्ति के लिए 21.26 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ अपर्याप्त भोजन, 0.63 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ दैवीय प्रकोप, 17.47 प्रतिषत उत्तरदात्रियाँ अशिक्षा, 07.30 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ निर्धनता को इसके लिये उत्तरदायी मानती हैं। वहीं 53.34 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ ग्रामीण क्षेत्रों में रोगों की उत्पत्ति के लिए उपरोक्त सभी कारणों को उत्तरदायी मानती हैं। अतः तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदात्रियाँ अपर्याप्त भोजन, दैवीय प्रकोप, अशिक्षा व निर्धनता जैसे प्रमुख कारणों को ही रोगों की उत्पत्ति के प्रमुख कारण मानती हैं। तथ्यों को निम्नलिखित तालिका द्वारा स्पष्ट किया गया है।

सारणी संख्या 4.7

रोगों की उत्पत्ति के लिए उत्तरदायी कारण

विकल्प	आवृत्ति	प्रतिशत
अपर्याप्त भोजन	67	21.26
दैवीय प्रकोप	02	0.63
अशिक्षा	55	17.47
जादू टोना	–	–
निर्धनता	23	7.30
उपरोक्त सभी	168	53.34
योग	315	100

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

अत्यधिक कार्य बोझ के कारण स्वयं ध्यान न दे पाना

ग्रामीण अर्थव्यवस्था कृषि पर पूर्ण रुप से निर्भर है तथा कृषि क्षेत्र में महिलाओं की सहभागिता महत्वपूर्ण कारक है। प्राचीन युग से ही ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ घरेलू कार्यों के साथ–साथ, कृषि तथा पशु पालन संबंधी क्षेत्रों में भी पुरुषों के साथ कार्य करती थीं। वर्तमान समय में भी महिलाएँ घर, खेत, खलिहान व पशुपालन आदि कार्यों में सतत् रुप से क्रियाशील हैं। पशुपालन व कृषि जैसे कार्यों को करने के साथ–साथ वे घरेलू जिम्मेदारियों जैसे खाना बनाना, साफ सफाई इत्यादि को भी पूरा करती हैं जिससे उनका सारा समय इन कार्यों को करने में ही समाप्त हो जाता है और वे स्वयं के रखरखाव व स्वास्थ्य पर भी ध्यान नहीं दे पाती हैं।

क्या आपका सारा समय घरेलू कार्यों जैसे चूल्हे पर खाना बनाना, घर की साफ सफाई एवं पालतू पशुओं की देखरेख में ही समाप्त हो जाती है और आप स्वयं पर ध्यान नहीं दे पाती हैं? यह जानने का प्रयास करने पर 24.12 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने नकारात्मक, 64.13 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने सकारात्मक उत्तर दिया जबकि 11.75 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ इस विषय पर तटस्थ रहीं। अतः तथ्यों से यह स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदात्रियों ने स्वीकार किया कि अत्यधिक कार्य बोझ होने के कारण भी उन्हें अपनी देखरेख के लिए समय नहीं मिल पाता है। उक्त विश्लेषण को निम्नांकित सारणी द्वारा यह स्पष्ट किया जा सकता है –

सारणी संख्या 4.8

क्या आप अत्यधिक कार्यबोझ के कारण स्वयं पर ध्यान नहीं दे पातीं ?

विकल्प	आवृत्ति	प्रतिशत
नहीं	76	24.12
हाँ	202	64.13
तटस्थ	37	11.75
योग	315	100

सरकार द्वारा उपलब्ध चिकित्सा सुविधाओं से संबंधित जानकारी

स्वास्थ्य को व्यक्ति के मूल्यों में सबसे उच्चतम स्थान मिला हुआ है, जिससे व्यक्ति विशेष का एवं राष्ट्रीय विकास का आधार तैयार होता है। देश के प्रत्येक नागरिक को पूर्ण सम्मान व विकास, क्षमता को प्रोत्साहित किया जाता है जो व्यक्तिगत प्रसन्नता, सुख शान्ति सम्पूर्ण समाज को देता है। यह सपना तभी पूर्ण हो सकता है जब देश के प्रत्येक नागरिक का स्वास्थ्य अच्छा व उन्नत रखा जाए। स्वाधीन भारत में स्वास्थ्य सुविधाओं में निरन्तर वृद्धि की जा रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं को विस्तृत रुप देने के लिए समुचित प्रयास किए जा रहे हैं। लोगों के स्वास्थ्य को उन्नत बनाने के लिए सरकार द्वारा अनेक योजनाएँ चलाई जा रही हैं। जिनका लाभ ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को भी प्रदान किया जा रहा है।

सरकार द्वारा असाध्य रोगों (जैसे टी.बी., अस्थमा, कैंसर, कोढ़ आदि) के लिए मुत चिकित्सा एवं प्राथमिक/सामुदायिक केन्द्रों पर स्वास्थ्यवर्द्धक दवाईयाँ मुत उपलब्ध कराये जाने के सन्दर्भ में बालिकाओं को कितनी जानकारी है। यह जानने का प्रयास करने पर 48.88 प्रतिशत उत्तरदात्रियों को इन सुविधाओं के विषय में जानकारी है जबकि 51.12 प्रतिशत उत्तरदात्रियों को इस विषय में कोई जानकारी नहीं है। उक्त विवरण को निम्न सारणी द्वारा स्पष्ट किया गया है–

सारणी संख्या 4.9

सरकार द्वारा उपलब्ध चिकित्सा सुविधाओं से संबंधित जानकारी

विकल्प	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	154	48.88
नहीं	161	51.12
योग	315	100

चिकित्सकों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों की उपेक्षा करना ग्रामीणों के निम्न स्वास्थ्य का प्रमुख कारण

1990 के दशक में आर्थिक प्रगति ने भारत में स्वास्थ्य सेवाओं की तस्वीर बदल दी। देश में बेहद उत्कृष्ट स्वास्थ्य सुविधाएँ तो बढ़ी किन्तु वे शहरी क्षेत्रों तक ही सिमट कर रह गईं। इससे बड़ी विडम्बना हमारे देश के लिए क्या हो सकती हैं कि एक ओर तो भारत विश्व मानचित्र पर मेडिकल टूरिज्म के रुप में लोकप्रिय हो रहा है वहीं दूसरी ओर उसी देश में रहने वाले लोग चिकित्सकों की कमी से जूझ रहे हैं। काफी पैसे खर्च करने के उपरान्त भी हमारे देश के सरकारी अस्पतालों की हालत में कोई सुधार नहीं आया है। पहले जितने चिकित्सकों और स्वास्थ्यकर्मियों की आवश्यकता थी वह लगातार बढ़ती जा रही है।

भारत एक ग्राम बहुल देश है किन्तु यहाँ पर दस में से आठ चिकित्सक और 80 प्रतिशत अस्पताल शहरों में हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रशिक्षित चिकित्सकों की सेवाएँ उपलब्ध कराना विभिन्न सरकारों के लिए एक बड़ी चुनौती बनी रही है। हर चिकित्सक को अपनी शुरुआती सेवाओं के दौरान एक निश्चित समय के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में रहना जरुरी किया गया व ग्रामों में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में स्वास्थ्य सेवाएँ देने वाले चिकित्सकों के लिए अतिरिक्त वेतन का प्रावधान भी किया गया किन्तु स्थिति जस की तस ही है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

क्या डॉक्टरों द्वारा गाँव की उपेक्षा करना ही ग्रामीणों के निम्न स्वास्थ्य स्तर का प्रमुख कारण है तब 71.12 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ इस तथ्य से सहमत थीं जबकि 13.96 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ असहमत थीं, वहीं 14.92 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने इसके लिए अन्य कारणों को उत्तरदायी माना।

सारणी संख्या 4.10

चिकित्सकों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों की उपेक्षा करना ग्रामीणों के निम्न स्वास्थ्य का प्रमुख कारण

विकल्प	आवृत्ति	प्रतिशत
सहमत	224	71.12
असहमत	44	13.96
अन्य कारण	47	14.92
योग	315	100

निष्कर्ष– ''बालिका स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य रक्षा'' का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि बालिका स्वास्थ्य को आज भी गंभीरता से नहीं लिया जाता है व उन्हें उचित चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध नहीं कराई जातीं। अधिकांशतः यह देखा गया है कि बालकों की तुलना में बालिकाएँ अधिक बीमार पड़ती हैं क्योंकि संकोच के कारण वे अपने माता–पिता को अपनी बीमारी के विषय में नहीं बताती हैं। अधिकांश बालिकाएँ अपने स्वास्थ्य के प्रति उदासीन प्रवृत्ति अपनाती हैं।

प्रस्तुत अनुसंधान में उत्तरदात्रियों से बालिकाओं के स्वास्थ्य पर उनके दृष्टिकोण को जानने का प्रयास किया गया है। अधिकांश उत्तरदात्रियाँ 81.58 प्रतिशत शारीरिक एवं मानसिक दोनों रुपों में स्वस्थ होने को ही स्वास्थ्य मानती हैं। 51.43 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ अपने आपको पूर्ण रूप से स्वस्थ मानती हैं जबकि 24.77 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने इस विषय पर कुछ नहीं कहा।

स्वास्थ्य रक्षा हेतु किए जाने वाले विशेष प्रयासों के संबंध में उत्तरदात्रियों ने अनियमितता का परिचय दिया है। 48. 57 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ अपने स्वास्थ्य रक्षा हेतु विशेष प्रयास नहीं करती हैं, 39.69 प्रतिशत बालिकाएँ स्वास्थ्य रक्षा हेतु विशेष प्रयास करती हैं जबकि 11.74 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने इस विषय पर कोई जबाव ही नहीं दिया।

स्वास्थ्य जैसे महत्वपूर्ण विषय पर बालिकाओं की उदासीन प्रवृत्ति इस बात को परिलक्षित करती है कि बालिकाएँ और माता–पिता दोनों ही उनके निम्न स्वास्थ्य स्तर के लिए उत्तरदायी हैं। साथ ही अशिक्षा, अज्ञानता, रुढ़ियाँ व संकोच भी इसके सहयोगी कारक हैं। स्वास्थ्य परीक्षण करवाने के संदर्भ में भी अधिकांश उत्तरदात्रियाँ 40.31 प्रतिशत अपना स्वास्थ्य परीक्षण सिर्फ बीमार होने पर ही कराती हैं, 15.24 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ कभी–कभी स्वास्थ्य परीक्षण कराती हैं। 33.97 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने कभी अपना स्वास्थ्य परीक्षण नहीं कराया था। मात्र 10.48 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ ही नियमित स्वास्थ्य परीक्षण कराती हैं।

यह सत्य है कि बालिकाएँ अपने स्वास्थ्य की रक्षा स्वयं ही कर सकती हैं किन्तु वे नहीं करतीं, क्योंकि वे अपनी बीमारी को अपने माता–पिता को बताने में संकोच का अनुभव करती हैं। काफी बालिकाएँ अपने रोगों के विषय में पुरुष चिकित्सकों से बताने में भी संकोच का अनुभव करती हैं। 41.58 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ अस्वस्थ होने पर सर्वप्रथम घरेलू उपचार करती हैं जबकि 43.18 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ चिकित्सक से इलाज कराती हैं, 02.22 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ अस्वस्थ होने पर सर्वप्रथम झाड़–फूँक कराती हैं, 04.76 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ इलाज के लिए वैद्य के पास जाती हैं जबकि 08.26 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने माना कि अस्वस्थ होने पर वे कोई भी उपाय नहीं करती हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्ति अपने स्वास्थ्य का ध्यान नहीं रखते और अक्सर जानकारी के अभाव में गंभीर रोगों से ग्रस्त हो जाते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में मात्र 5.07 प्रतिशत उत्तरदात्रियों को ही सभी रोगों से संबंधित जानकारी थी, जबकि 91.75 उत्तरदात्रियों को कुछ रोगों के विषय में जानकारी है। सर्वाधिक 38.09 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ पेट दर्द / सिर दर्द, 25. 72 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ त्वचा संबंधी, 13,65 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ अस्थमा, 12.39 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ रक्ताल्पता, 3.17 प्रतिशत श्वेत प्रदर व 6.98 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ अन्य रोगों के विषय में जानकारी रखती हैं।

अस्वच्छता, अशिक्षा, निर्धनता, पानी की उचित निकासी का ना होना इत्यादि ऐसे कई प्रमुख कारण हैं जो ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली बालिकाओं के स्वास्थ्य को निम्न बनाते हैं। रोगों की उत्पत्ति के लिए उत्तरदायी प्रमुख कारणों में 21.26 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ अपर्याप्त भोजन को, 17.47 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ अशिक्षा को, 7.30 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ निर्धनता को, 0.63 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ दैवीय प्रकोप को व सर्वाधिक 53.34 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने उपरोक्त सभी कारणों को ग्रामीण क्षेत्रों में रोगी की उत्पत्ति के लिए उत्तरदायी माना है।

हमारे समाज में आज भी बालिका स्वास्थ्य को उतनी गंभीरता से नहीं लिया जाता है जितना लिया जाना चाहिए अपितु उन्हें तो उचित भोजन, देखरेख व पोषण जैसी मूलभूत सुविधाओं से भी वंचित रखा जाता है। बालिकाओं की अस्वस्थता को गंभीरता से ना लिए जाने के प्रमुख कारणों में सर्वाधिक 46.99 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ पुत्र और पुत्री के मध्य किए जाने वाले

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

लिंग भेदभाव को 17.78 प्रतिशत माता–पिता के अशिक्षित होने को 10.16 प्रतिशत निर्धनता को 14.93 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ ग्रामीण क्षेत्रों में उचित चिकित्सा सेवाओं के अभाव को 3.80 प्रतिशत बालिकाओं पर खर्च करना व्यर्थ है व 6.34 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ अन्य कारणों को इसके लिए उत्तरदायी मानती हैं।

भारत की आधी से ज्यादा आबादी गाँवों में रहती है और कृषि व पशुपालन जैसे कार्य करते हैं किन्तु वहाँ पर आज भी उचित चिकित्सकों व चिकित्सा सुविधाओं का अभाव साफ तौर पर दिखाई पड़ता है। अस्वस्थ होने पर उचित चिकित्सा प्राप्त करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों को शहरों में आना पड़ता है। प्रस्तुत अध्ययन में अधिकांश 71.12 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने इस तथ्य से सहमत थीं कि चिकित्सकों द्वारा गाँव की उपेक्षा करना ही ग्रामीणों के निम्न स्वास्थ्य स्तर का मुख्य कारण है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 विभूति पटेल (2012) : ''बालिकाओं का स्वास्थ्य एवं शिक्षा'' (बाल किशोरी – सामाजिक स्थिति और चुनौतियाँ), दिसम्बर, अंतरंग संगिनी पत्रिका, मुम्बई।
2. Save the children : http://www.savethechildren.in programme
3. प्रतिमा चतुर्वेदी (2012) : ''महिला स्वास्थ्य के सामाजिक आयाम'', भारत में महिला साक्षरता और सशक्तिकरण, वाईकिंग बुक्स, जयपुर
4. Neera Kuckreja Sohoni - "Status of Girl Child in development strategies" Har-Anand Publication, New Delhi (1994).

*****